संगीत में सौन्दर्य तत्त्व

Dr. Sushma Sharma
Assistant Professor, Lovely Professional University, Phagwara

जिस गुण के कारण सजीव, निर्जीव वस्तुओं के प्रति आकर्षण और सम्मोहन होता है तथा सुख की अनुभूति होती है, उसे सुन्दर कहा जाता है। सुन्दर शब्द को सौन्दर्य शास्त्रीयों ने एक भ्रमक शब्द के रूप में प्रयोग किया है। इसका प्रयोग सौन्दर्य शास्त्री दो अर्थों में करते आए हैं, कभी सुन्दर वस्तु के लिए इसका प्रयोग किया जाता है तो कभी सुन्दर विशेषण के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। किसी भाव को सौन्दर्य की कोटि में लाने के लिए सामान्य गुणों के साथ–साथ विशिष्ट गुणों की भी आवश्यकता होती है। सौन्दर्य आनन्द प्रधन अनुभूति है। इसकी प्रतीति मुख्यतः दृश्य और श्रवणेन्द्रीयों से होती है। मनुष्य जिस वस्तु को देखता है यदि वह उसे सुन्दर लगती है, तो उसके मन को उस वस्तु के प्रति आकर्षण उत्पन्न होता है। सौन्दर्य आनन्द प्रधन अनुभूति है जिसका स्त्रोत इंद्रिय संवेदनाएँ हैं। काण्ट ने कहा है कि सौन्दर्य वेग के तत्व और सवेंगात्मक रूप का समन्वय है। वस्तु का सौन्दर्य इंद्रियों को ही नहीं विवेक को भी सन्तुष्ट करत है। सौन्दर्य विधता की योजनाब(सृष्टि का अद्भुत साक्षात्कार कराता है तथा आनन्दानुभूति प्रदान कराता है। शान्तायान के अनुसार आनन्द के वस्तुनिष्ट रूप का नाम ही सौन्दर्य है, सौन्दर्य एक मानसिक अनुभूति या प्रतीति मात्रा है जिसे हम किसी विशेष क्षणों में अनुभव करते हैं, सौन्दर्य का एक पक्ष भावनात्मक तो दूसरा बौ(िक है। इसमें भाव एवं विचार दोनों का सामन्जस्य होता है।

सौन्दर्य को अंग्रेजी में Aesthetic कहते हैं। यह शब्द पाश्चात्य सभ्यता की देन है। पाश्चात्य विज्ञानों के अनुसार इस शब्द का अर्थ– फ्ऐन्द्रिय सुख की चेतनाग् है। सौन्दर्य वह तत्व है, जिसके कारण भाव, रस, आनन्द एवं सन्तुष्टि प्राप्त होती है। सौन्दर्य वस्तु अथवा उसे देखने वाले के मन दोनों में स्थित होता है। श्री कृष्ण ने श्रीमद्भगवत् गीता में कहा है कि फ्विश्व में व्याप्त समस्त सौन्दर्य में मेरा तेज विद्यमान है अथवा विश्व का समस्त सौन्दर्य मुझ में मिहित है।ग् इस प्रकार सौन्दर्य एक ईश्वरीय गुण है। सौन्दर्य भावना मनुष्य के अन्तःकरण की परम निध् िहै। यह मनुष्य को ईश्वर द्वारा प्रदत्त एक विशिष्ट वरदान है।

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE

सौन्दर्य के प्रति विद्वानों के मत

भारतीय विद्वानों ने सौन्दर्य को अध्यात्मिकता से जोड़ा है। जीवन में उत्तम व्यवहार सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की साध्ना को ही जीवन का परम् लक्ष्य माना है। महाकवि कालिदास के अनुसार सच्चा सौन्दर्य वह है जो पाप वृति की ओर अग्रसर न करके सात्विकता की प्रेरणा देता है अर्थात् सौन्दर्य वह नहीं जिसके कारण मनुष्य में मानसिक विकार उत्पन्न हो अपितु उसमें सात्विकता का

संचार हो। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सौन्दर्य को बाह्य वस्तु की अपेक्षा भीतर की वस्तु कहा है। कुछ वस्तुओं का आकर्षण इस तरहं का होता है कि वह हमारे मन पर अपना अध्किार कर लेती है। हम भावात्मक रूप से उस वस्तु से जुड़ जाते हैं और सौन्दर्य की अनुभूति होती है। हरद्वारी लाल शर्मा ने अपनी पुस्तक सौन्दर्य शास्त्रा में कहा है कि जहां आश्चार्य एवं आनन्द की अनुभूति होती है वही सुन्दर है। कुमार विमल की पुस्तक फ्सौन्दर्यशास्त्रा के तत्त्वय् में हरिवंश शास्त्राी ने अपने विचारों में कहा है कि फ्स्थूल या सूक्ष्म जगत में आत्मा की अभिव्यक्ति ही सौन्दर्य है।य् भारतीय विद्वानों के अनुसार जो कला दिव्य सौन्दर्यानुभूति की ओर जितना ले जाएगी वह उतनी ही श्रेष्ठ व उत्कृष्ट मानी जाएगी। ललित कलाएं भारतीयों की सजग, सक्रिय, सूक्ष्म व गहन सौन्दर्य भावना की प्रतीक है।

पश्चिमी विचारकों में सुकरात ने सौन्दर्य को लक्ष्य की प्राप्ति में माना है। उन्होंने वस्तु की बाह्य व कलात्मक सौन्दर्य की अपेक्षा उसकी उपयोगिता को ही आधर माना है। प्लेटों का सौन्दर्य चिन्तन आध्यात्मवादी था । सच्चा सौन्दर्य मानव मन में स्थित है और वहीं से कला सृजन की प्रेरणा प्राप्त होती है। प्लेटों के विचार में वही कला श्रेष्ठ है जो ऐन्द्रिय आनन्द प्रदान करे साथ ही देवत्व की भावना भी जागृत करे। हीगल ने आनी पुस्तक दि फिलॅसफी आफ फाईन आर्ट में कहा है कि जो हमारी इन्द्रियों को प्रभावित करे फिर चेतना पर भी प्रभाव डाले वही सौन्दर्यानुभूति है। सुप्रसि(कवि कीट्स ने कहा है फ्सत्य ही सुन्दर है और सुन्दर ही सत्य हैय् इस प्रकार सौन्दर्य के प्रति सभी विचारको के भिन्न–भिन्न दृष्टिकोण हैं। इन सभी के विचार जानने के उपरान्त सौन्दर्य वही है जिससे आत्मिक सुख और आनन्द की अनुभूति हो। सौन्दर्य की यह अनुभूति हमें ललित कलाओं के माध्यम से प्राप्त होती है। कला अपने सौन्दर्य से सर्वप्रथम इन्द्रियों को प्रभावित करती है फिर हृदय को आनन्द प्रदान कर आत्मविभोर कर देती है। ललित कलाओं में संगीत सर्वश्रेष्ठ स्थान रखता है। संगीत का रूप दर्शनीय नहीं है, श्रवणीय है। इसमें गीत माधुर्य और लय का समन्वय है। अतः संगीत सभी कलाओं में अध्कि व्यापक है। संगीत कला मूक पशुओं को भी प्रभावित करती है। संगीत में सभी भाव स्वर के माध्यम से व्यक्त होते है। स्वरों के माध्यम से जिस आनन्द अंश की अनुभूति होती है। वही सौन्दर्यनुभूति है।संगीत के प्रभाव से आविर्भुत होने पर रसिक के हृदय में एक ऐसी अनुभूति उत्पन्न होती है कि उसमें सांसारिकता के प्रति एक उदासीनता का भाव उत्पन्न हो जाता है और उसे बृह्मनन्द की अनुभूति होने लगती है। प्लेटों का मत है कि आत्मा के लिए संगीत का वही महत्व है जो शरीर के लिए व्यायाम का। संगीत को सत्यं, शिवं, सुन्दरम् की प्रतीति का आधर माना गया है।

कलाओं का सर्वप्रथम तत्व है सौन्दर्य सम्पन्न होना। प्रत्येक कला के माध्यम व उपकरण भिन्न–भिन्न होते हैं, कला की शास्त्रीय व परम्परागत सीमाएँ होती है, साथ ही कलाकार को अपनी कल्पना आदि को व्यक्त करने की भी स्वतन्त्राता भी होती है, परन्तु सारे विधन का लक्ष्य होता है 'सौन्दर्य की उपलब्धि'। कलाओं में सौन्दर्य को और बढ़ाने के लिए कुछ तत्वों का ध्यान रखना चाहिए जो इस प्रकार है।

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE

पूर्णता

सौन्दर्य की अनुभूति तभी होती है जब आकृति, संदेश आदि पूर्ण रूप से अभिव्यक्त एवं स्पष्ट हो। पूर्णता से ही अभिव्यक्ति में स्पष्टता आती है। संगीत कला में बंदिश की पूर्णता अर्थात स्थायी अन्तरे सहित प्रस्तुतीकरण से ही सौन्दर्य स्थापित होता है।

अनुपात

अन्य कलाओं की भांति संगीत कला में भी उसके विविध अंगो व आयामों में अनुपात होता है। राग में लगने वाले स्वरों के महत्व का अनुपात, प्रस्तुतीकरण के समय आलाप, तान आदि की मात्राा का अनुपात, कण, भीड़, गमक, खटका, घसीट कृंतन आदि का प्रयोग एक अनुपात में राग की प्रकृति के अनुसार किया जाता है।

संतुलन

जीवन की सफलता का रहस्य संतुलन में ही है। 'सन्तुलन' कला और सौन्दर्य का एक व्यापक और सर्वमान्य सि(ान्त है। कलाओं में कलापक्ष और भावपक्ष को समान महत्व देकर सन्तुलन स्थापित किया जाता है। संगीत में राग की बढ़त करते समय मंद–मध्य सप्तक में मध्य षड्ज को तथा मध्य तार सप्तक में तार षड्ज को स्थान महत्व दिया जाता है, जिससे सन्तुलन बना रहता है। इसके अतिक्ति बन्दिश, आलाप, तान आदि को समुचित महत्व देने से संतुलन स्थापित होता है।

अनुपात

संगीत कला में आलाप व तान को एक आनुपातिक समय दिया जाता है। राग की बढ़त में मन्द्र मध्य व तार सप्तकों को भी विशेष अनुपात में महत्व दिया जाता है। राग में वादी– संवादी और अनुवादी स्वरों में प्रयोग नियमानुसार व अनुपात से ही किया जाता है।

लय

लय संगीत का अंग है। क्रियाओं के बीच के समान विश्रांति को लय कहा गया है। लय क्रिया और विश्रांति दोनों से निर्मित होती है। लय सौन्दर्य उत्पन्न करने में विशेष भूमिका निभाती है।

विविध्ता तथा नवीनता

प्लेटो ने विविध्ता में सौन्दर्य माना है तो कालिदास ने कहा है कि विविध्ता से ही नवीनता उत्पन्न होती है। अलग–अलग घरानों की प्रस्तुति के तरीके भी विविध्ता को दर्शाते है। विलम्बित ख्याल के बाद द्रुत ख्याल,तराना आदि विविध्ता स्थापित करते हैं। संगीत में एक ही राग को बार–बार सुने पर भी वह नया सा लगता है क्योंकि कलाकार अपनी प्रतिभा से नई–नई स्वर लहरियों की रचना करते हैं। आवाज के लगाव की रीतियों से राग का श्रृंगार करते हैं। जिससे राग में सौन्दर्य वर्ध्न होता है।

भाव तथा आनन्द

कला के लिए कहा जाता है कि रूप तथा भाव का समुचित समन्वय ही उसका सौन्दर्य है। अतः सौन्दर्य के लिए कला में भाव होने चाहिए तभी आनन्द प्राप्त होगा। संगी द्वारा भावों की अभिव्यक्ति तथा आनन्दानुभूति दोनों कार्य पूर्ण होते हैं।

प्रस्तुतीकरण

कला को प्रस्तुत करने के लिए विशिष्ट प्रसंग,समय, अवसर, वातावरण,स्थान आदि का महत्व होता है। कला–सौन्दर्य को अध्कि प्रभावशाली बनाने के लिए प्रस्तुतीकरण का भी अपना विधन है।

संगीत स्वाभाविक रूप में ही सुन्दर है इसे और अध्कि सुन्दर रूप प्रदान करने अथवा इसके सौन्दर्य में स्थिरता लाने के लिए उपर्युक्त नियमों और तत्वों को ध्यान में रखना आवश्यक है। संगीत एक संश्लिष्ट कला है यह आत्मा को सुख की अनुभूति और सौन्दर्य अवगाहन का मार्ग प्रदान करती है।

संदर्भ ग्रन्थ

भटनागर, मधुरलता, भारतीय संगीत का सौन्दर्य विधान

भार्गव सरोज, सौन्दर्य बोध एवं ललित कलाएं

शर्मा हरद्वारी लाल, सौन्दर्य शास्त्र

प्रसाद द्वारिका, रस और सौन्दर्य

भाटा चन्द्र कला, भारतीय एवं पाश्चात्य सौन्दर्य

कुमार विमल, सौन्दर्य शास्त्रा के तत्व

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE